स्पंदन

ललित कलाओं का प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान

सम्मान समारोह
2013

सम्मानित रचनाकार 2013

स्वयं प्रकाश

स्पंदन कथा शिखर सम्मान

(निरन्तर सृजनशील वरिष्ठ साहित्यकार के लिए)

ज्ञानरंजन

स्पंदन साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान

'पहल' के लिए

कलापिनी कोमकली

स्पंदन ललित कला सम्मान

(गायन के लिए)

भालचन्द्र जोशी

स्पंदन कृति सम्मान

('जल में धूप' कथा संग्रह के लिए)

दिनेश कुशवाह

स्पंदन कृति सम्मान

('इसी काया में मोक्ष' कविता संग्रह के लिए)

सुशील सिद्धार्थ

स्पंदन आलोचना सम्मान

(आलोचना कर्म के लिए)

सुधा ओम ढींगरा

स्पंदन प्रवासी कथा सम्मान

(प्रवासी कथा साहित्य के लिए)

राष्ट्रबन्धु

स्पंदन बाल साहित्य सम्मान

(बाल साहित्यकार के लिए)

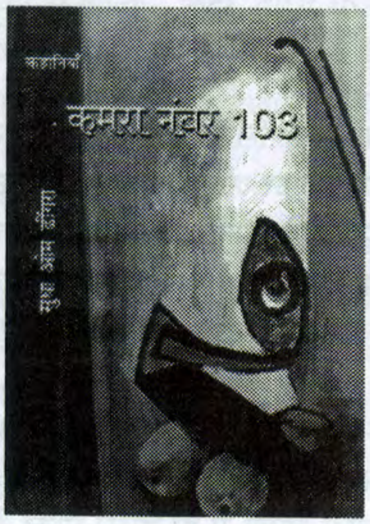

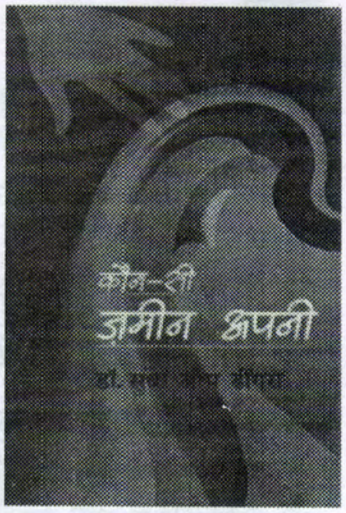

डॉ. सुधा ओम ढींगरा

जन्म : जालंधर, पंजाब।

सम्पादक : हिन्दी चेतना (कैनेडा एवं अमेरिका की सर्वाधिक लोकप्रिय अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका); विधाएँ- कविता, कहानी, उपन्यास, इण्टरव्यू, लेख एवं रिपोताज।

कृतियाँ : कौन-सी जमीन अपनी, वसूली (कहानी-संग्रह); धूप से रूठी चाँदनी, तलाश पहचान की, सफर यादों का (काव्य-संग्रह); सम्पादन- मेरा दावा है (काव्य-संग्रह, अमेरिका के कवियों का सम्पादन); परिक्रमा (पंजाबी में अनुवादित हिन्दी उपन्यास); माँ ने कहा था (काव्य सी.डी.); 22 संग्रहों में कविताएँ, कहानियाँ प्रकाशित; संदली बुआ (पंजाबी में संस्मरण), टारनेडो (कहानी-संग्रह पंजाबी में अनूदित), कई कृतियाँ पंजाबी और अंग्रेज़ी में अनूदित।

विशेष : भारत एवं अन्तरजाल की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में कहानियाँ, कविताएँ व लेख निरन्तर प्रकाशित होते रहते हैं; अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति (यू.एस.ए.) के कवि सम्मेलनों की राष्ट्रीय संयोजक; हिन्दी विकास मंडल (नार्थ कैरोलाइना) की निर्देशक; उत्पीड़ित नारियों की सहायक संस्था 'विभूति' की सलाहकार; इंडिया आर्ट्स ग्रुप की स्थापना कर हिन्दी के बहुत से नाटकों का मंचन किया; शिडोरी प्रोडक्शन की संस्थापक एवं निर्देशक; इससे शो करके शिक्षा, कला और साहित्य के लिए धन एकत्रित किया जाता है; अनगिनत कवि सम्मेलनों का सफल संयोजन एवं संचालन किया है; रेडियो सबरंग (डेनमार्क) की संयोजक, टी.वी., रेडियो एवं रंगमंच की प्रतिष्ठित कलाकार।

सम्मान : 'कौन-सी जमीन अपनी' कहानी संग्रह को पन्द्रहवाँ अम्बिकाप्रसाद दिव्य पुरस्कार; दी संडे इंडियन द्वारा विश्व की 111 हिन्दी महिला लेखिकाओं पर प्रकाशित अंक में अमेरिका की छह लेखिकाओं में से एक; कथाबिम्ब पत्रिका में प्रकाशित कहानी 'फंदा क्यों?' पाठकों के अभिमतों के आधार पर वर्ष 2010 की श्रेष्ठ कहानी और कमलेश्वर स्मृति कथा पुरस्कार 2010 द्वारा पुरस्कृत; 'मोरिस्विल्ल नाओ' पत्रिका ने अपने 'स्पॉटलाइट सेक्शन (2008)' में उपलब्धियों पर इण्टरव्यू प्रकाशित किया; चतुर्थ प्रवासी हिन्दी उत्सव 2006 में अक्षरम प्रवासी मीडिया सम्मान; हैरिटेज सोसाइटी नार्थ कैरालाईना (अमेरिका) द्वारा सर्वोत्तम कवयित्री 2006 से सम्मानित; ट्राइएंगल इंडियन कम्युनिटी, नार्थ कैरोलाईना (अमेरिका) द्वारा 2003 नागरिक अभिनन्दन; हिन्दी विकास मण्डल, नार्थ कैरोलाईना, हिन्दू सोसाइटी नार्थ कैरोलाईना एवं अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति (अमेरिका) द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं सामाजिक कार्यों के लिए कई बार सम्मानित; अमेरिका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं सामाजिक कार्यों के लिए वाशिंगटन डी.सी. में तत्कालीन राजदूत श्री नरेशचन्दर द्वारा सम्मानित।

सूरज क्यों निकलता है...

सुधा ओम ढींगरा

वे गत्ते का एक बड़ा-सा टुकड़ा लिए कड़कती धूप में बैठ गए, जहाँ कारें थोड़ी देर के लिए रुककर आगे बढ़ जाती हैं। बिना नहाये-धोये, मैले-कुचैले कपड़ों में वे दयनीय शक्ल बनाये, गत्ते के टुकड़े को थामे हुए हैं, जिस पर लिखा है- 'होमलेस, नीड यौर हैल्प।' कारें आगे बढ़ती जा रही हैं, उनकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दे रहा है।

सैकड़ों कारों में से सिर्फ़ दस-बारह कारों वाले, कारों का शीशा नीचे करके उनकी तरफ़ कुछ डॉलर फेंकते हैं और फिर स्पीड बढ़ाकर चले जाते हैं। दोनों आँखों से ही डॉलर गिनते हैं, एक-दूसरे को देखते हैं और न में सिर हिला देते हैं...

अब वे सड़क के नए कोने पर खड़े हो गए हैं, जहाँ गन्तव्य-स्थान पर मुड़ने के लिए एग्जिट के कोने पर रुकने का चिह्न है यानि स्टाप साइन।

ज्यों ही कारें रुकती हैं, वे गत्ते के टुकड़े को उनके सामने कर देते हैं, कुछ लोगों ने उन्हें गाली दी- 'बास्टर्ड, यू आर बर्डन ऑन द सोसाइटी।'

कुछ ने अपनी कार का शीशा नीचे करके कहा- 'वाए यू गाईस डोंट वर्क?'

दोनों ढीठ हो चुके हैं, गालियाँ सुनकर चेहरा भाव-हीन ही रहता है और दोनों ऐसा अभिनय करते हैं कि जैसे उन्होंने कुछ सुना नहीं। गत्ते का टुकड़ा हाथ में थामे सूखे होठों पर जीभ फेरते और थूक से गला तर करने की कोशिश करते हुए, वे एक कार को छोड़, दूसरी की ओर चल पड़ते हैं।

कई दिनों से उनके गले सूखे हुए हैं, शराब की एक बूँद उन्हें नसीब नहीं हुई। पूरे बदन में बहुत तनाव है, उसे तनाव रहित करने के साधन नहीं जुटा पाए वे। जेब में वेल्फेयर में मिले भोजन के कूपनों के अतिरिक्त एक डॉलर भी उनके पास नहीं है। ये कूपन सरकार उन्हें खाने की सामग्री खरीदने के लिए देती है। कूपन बेचकर वे शराब की बोतल और सिगरेट का पैक खरीदना चाहते हैं, पर कोई खरीददार नहीं मिल रहा उन्हें। दोनों निराश हैं, परेशान हैं, हलक पानी से बहल नहीं रहा। उसे बीयर चाहिए, व्हिस्की चाहिए। ये सब वे कहाँ से लाएँ? हारकर आज उन्होंने अपना पुराना धन्धा अपनाया... इससे कई बार अच्छी कमाई हो जाती है। यह कमाई एक रात का पूर्ण सुख दे जाती है। वह रात अगले कुछ महीनों के लिए उन्हें काफी तुष्ट कर जाती है...

शाम ढलने से पहले ही उन्होंने अपनी कमाई को गिना, अभी भी मन चाही रकम पूरी नहीं हुई। दोनों बेहद थम गए हैं। पसीने से भीग गए हैं और उन्हें शाम से पहले ही शैल्टर होम में लौटना है। वे पास के बस स्टॉप की ओर चल पड़े। दोनों चुप हैं, कुछ बोल नहीं रहे। डाउन टाउन राले की बस आती देख, वे भागकर उसमें चढ़ गए। यह बस बेघर लोगों की रसोई (सूप चिकन) के पास जाकर रुकती है, वहीं मुफ्त में खाना खाकर वे साथ ही के शैल्टर होम में सोने जाने की सोच रहे हैं। कई दिनों से वे यही कर रहे हैं, इस तरह वे अपने कूपन बचा रहे हैं। उन्हें बेचकर वे ज़्यादा से ज़्यादा पैसा बनाना चाहते हैं।

बस में बैठते ही पहली बार पीटर ने मुँह खोला- 'भाई, मंदी ने अमेरिका के लोगों को सचमुच मार डाला है। मुझे उन पर तरस आ रहा है। उनके पास हम जैसे बेघर लोगों को देने के लिए डॉलर ही नहीं हैं।'

सिर खुजाते हुए जेम्ज ने कहा- 'यार, पैसे के साथ-साथ लोगों के दिल भी छोटे हो गए हैं। इंसानियत तो रही नहीं। चिलचिलाती धूप में बैठे भीख माँगते रहे। किसी को दया नहीं आई। पहले काफी पैसे मिल जाते थे...।'

उस बस में अधिकतर बेरोजगार, बेकार, बेघर पिछले स्टॉप से ही बैठे हुए थे, वे सब सिर हिलाकर जेम्ज का साथ देने लगे- 'हाँ-हाँ, बहुत ग़लत है यह। लोगों को देखना चाहिए... कितनी कड़ी मेहनत करते हैं हम।'

'हमारी स्थिति कोई समझता नहीं। आज दो जगह काम माँगने गया था, काम मिला नहीं। पिछले दो सालों से यही हो रहा है। बस में चढ़ने के लिए भी पैसे चाहिए। कहाँ से पैसा लाऊँ? बस में बैठा माइक रोष में बोला।

'सरकार को कुछ करना चाहिए, हम-जैसे बेरोजगार, बेघर

लोगों के लिए निःशुल्क बसें चलानी चाहिए...।' जेम्ज बोला।

'अरे सरकार कुछ नहीं करेगी, यू.एस.ए. की इकॉनोमी का बुरा हाल है। देखते नहीं, लोगों के पास हम गरीबों को देने के लिए पैसे नहीं।' पीटर बोला।

बातें करते-करते डाउन टाउन राले के शैल्टर होम के केन्द्रीय ऑफ़िस का बस स्टॉप आ गया, सब लोग यहीं उतर गए। रसोई इसी ऑफ़िस में है।

शाम होते ही सूप किचन में होमलैस लोग भोजन के लिए इकट्ठे होने शुरू हो जाते हैं, बाद में ये लोग सोने के लिए किसी न किसी शैल्टर होम में जगह पा लेते हैं। इस रसोईघर में शहर के कुछ रेस्टोरेण्ट अपना बचा हुआ खाना और बहुत से ग्रोसरी स्टोर्स अपनी सब्जियाँ भेजते हैं। स्कूलों में बच्चों को इनकी मदद करना सिखाया जाता है और वे केन फ़ूड इकट्ठा करके यहाँ भेजते हैं। निश्चित समय पर यहाँ लंच और डिनर दिया जाता है। इसलिए सब होमलेस समय पर यहाँ खाना खाने पहुँच जाते हैं। इस रसोई में अक्सर कोई न कोई समाजसेवी संस्था के स्वयंसेवी खाना दे जाते हैं, कई बार वे उसी रसोई में खाना बनाकर इन लोगों को खिलाते हैं। भारतीय मूल के लोग तो उत्सवों और बच्चों के जन्मदिन पर यहाँ स्वादिष्ट व्यंजन दे जाते हैं।

आज रात्रि के भोजन में स्थानीय संस्था के स्वयंसेवकों ने अमरीकी व्यंजन परोसे- एंजला ने मुँह बनाया- 'नो टेस्ट...।' पीटर ने फिर कहा- 'अमरीका ग़रीब हो रहा है। सरकार को कुछ करना चाहिए। मंदी ने खाना भी बेकार कर दिया...।' आसपास बैठे सभी होमलेस बोले- 'तुम बिल्कुल सही कह रहे हो दोस्त... बिल्कुल सही।' स्वयंसेवी चुपचाप खाना परोसते रहे...।

मुफ्त में खाना खाकर जेम्ज और पीटर ने अपनी फूड स्टैम्प्स यानी कूपन फिर बचा लिए। अमरीकी सरकार सोचती है कि ग़रीबी-रेखा के नीचे के लोगों को फूड स्टैम्प्स देकर वह उनका भला कर रही है, इससे वे भूखे नहीं रहेंगे और खाना ही खाएँगे, अगर पैसा देंगे तो शराब व सिगरेट खरीद लेंगे, पर निकालने वाले तो यहाँ भी रास्ता निकाल लेते हैं। खाना खाने के बाद वे सोने के लिए शैल्टर होम की ओर चल पड़े...।

शैल्टर होम के सामने एक लम्बी लाइन लगी है। उसमें तरह-तरह के लोग खड़े हैं। कई दिनों से, नहाए हुए नहीं हैं, गंदे, कुछ नशेड़ी, कुछ सचमुच में समय के हाथों पिटे हुए, कई जो जीवन में काम नहीं करना चाहते, बस सरकारी सेवा का जी-भरकर आनन्द लेना चाहते हैं, पीटर और जेम्ज की तरह। अधिकतर ये लोग उन्मुक्त, बेपरवाह, जीवन की चुनौतियों से परे अपनी दुनिया में डूबे रहते हैं। उदासी, घुटन और बदबू वातावरण में समाई हुई है। पंक्ति में खड़े यूजीन ने अपने अगले वाले साथी को धीरे से बताया- 'ब्रदर, हाईवे 40 के पास हैरिटेज इन मोटल वाले आधी कीमत पर कूपन ले रहे हैं...।' उन दोनों ने सुन लिया। एक-दूसरे की ओर देखा। दोनों की आँखों में चमक आ गई। बिना बोले वे एक-दूसरे की बात समझ गए। लाइन को छोड़कर वे भाग गए।

आज का दिन अच्छा है उनके लिए, हैरिटेज इन मोटल के पास वाले बस स्टॉप पर रुकने वाली बस आकर सूप किचन के सामने रुक ही रही थी। वे जल्दी से उसमें चढ़ गए। कुछ घंटों के बाद होने वाले सुखद अनुभवों की कल्पना से ही उनके रूखे-सूखे चेहरों पर रौनक आ गई। वे हैरिटेज इन मोटल में गए और अपने कूपन आधे में बेच दिए। कई मोटल वाले फूड स्टैम्प्स आधी कीमत पर लेकर, अपने मोटल के लिए खाद्य-सामग्री खरीद लेते हैं। उससे उन्हें काफी बचत हो जाती है।

पैसे गिनते हुए जेम्ज ने कहा- 'भाई, महँगाई बहुत हो गई है, सस्ती से सस्ती लड़की भी पचास डॉलर से कम में साथ नहीं चलती, अभी और डॉलर चाहिए...।'

'नहीं, आज हमें इसी से काम चलाना है, अब और इन्तज़ार नहीं होता।' पीटर बेचैन-सा होता हुआ बोला।

मोटल के बाहर से ही उन्होंने फिर डाउन टाउन राले वाली बस अपने पुश्तैनी घर जाने के लिए पकड़ी। यह घर उनके नाना-नानी का है, जिसमें वे जन्मे-पले हैं और अब वह ख़स्ता हालत में है, किसी के पास उसे ठीक करवाने के लिए पैसे नहीं। इस घर में उनकी दो बहनें अपने बच्चों के साथ रहती हैं और बाक़ी के भाई कभी-कभी इस घर में थोड़ी देर के लिए रुक लेते हैं, पर रहता कोई नहीं, हाँ, वे दोनों, अक्सर आते हैं, उनका कुछ सामान पड़ा रहता है यहाँ। माँ तो कई साल पहले इस दुनिया से चली गई।

टैरी नाम की महिला उनकी माँ थी। उसके लिए माँ शब्द सही नहीं, उसे माँ कहना उचित भी नहीं, यूँ कह सकते हैं कि वह बच्चे पैदा करने वाली मशीन थी। माँ क्या होती है, बच्चों को पता नहीं और ममता क्या होती है, टैरी को पता नहीं। बस उसने दो बच्चों को जन्म दिया, ग़रीबी-रेखा से नीचे वालों की सरकारी सहायता वेल्फेयर लेने के लिए। हर बच्चे के बाद नए बच्चे के पालन-पोषण हेतु वेल्फेयर से उसे और पैसा मिल जाता था।

उसकी माँ अक्सर गुस्सा होती- 'टैरी, तुम अब और खाली

नहीं बैठोगी, कुछ काम-धन्धा करो, नहीं तो मैं घर से निकाल दूँगी। हर साल पेट में बच्चा डाल लेती हो। तुझे तो यह भी पता नहीं कि किसका बाप कौन है।'

टैरी माँ के गले में बाँहें डालकर कहती- 'माँ, तुम मुझे घर से नहीं निकाल सकतीं, मैं तुम्हारी अकेली संतान हूँ और तुम्हारा वंश बढ़ा रही हूँ। क्या तुम ग्रैंड चिल्ड्रन नहीं चाहतीं।'

'टैरी, मुझे नाते-नातियाँ पसन्द हैं। पर तुम कोई काम तो करो। बच्चे हम पालते हैं और तुम सारा दिन पुरुष मित्रों के साथ सिगरेट फूँकती हो और शराब में मस्त रहती हो। रात को तुझे क्लबों से फ़ुर्सत नहीं मिलती। तुझे पता भी है कि बच्चे कैसे पल रहे हैं? बहुत कामचोर हो गई हो। तुम्हारी हड्डियों में आराम बस गया है। ऐसे कैसे चलेगा?' माँ झगड़ा करती।

'चलेगा माँ... चलेगा, देखती रहो। मुझे पता है, बच्चे अच्छे पल रहे हैं, तुम लोग अच्छे नाना-नानी हो।' वह हँसकर कहती- 'वैसे मैं काम क्यों करूँ? हमारे बुजुर्गों ने वर्षों इन लोगों की ग़ुलामी की है, अब सरकार का फ़र्ज बनता है कि हमारा ध्यान रखे।'

उसने सरकार से अपना ध्यान रखवा लिया और ग्यारहवें बच्चे तक वह आर्थिक रूप से सुरक्षित हो गई। उसके माँ-बाप कुछ बच्चों तक तो खूब लड़ते रहे। फिर उन्होंने भी परिस्थितियों के साथ समझौता कर लिया। आर्थिक सुदृढ़ता ने उन्हें चुप करवा दिया। वेल्फेयर के अनुसार पैसा बच्चे के अठारह वर्ष के होने तक दिया जाता है और ऐसे में बच्चों को स्कूल भेजना जरूरी होता है। उसने उन्हें स्कूल भेजा, पर वे पढ़ते हैं या नहीं, यह जानना कभी ज़रूरी नहीं समझा। हाई स्कूल किसी ने पास नहीं किया और अठारह वर्ष के होते ही, वे बिना कुछ सीखे स्कूल छोड़ गए।

माँ के स्वभाव, रहन-सहन और आदतों का परिणाम यह निकला कि बेटियाँ माँ के ही नक़्शे-क़दमों पर चलती हुई, रोज़ पुरुष बदलती हैं और तीन-तीन बच्चों की अविवाहिता माँएँ बनकर सरकारी भत्ता ले रही हैं। दो बेटे नशा बेचने वाले गिरोह में शामिल होकर न्यूयार्क चले गए, दो चोरी-डकैती में जेल में हैं, उनका जेल में आना-जाना लगा रहता है। एक बेटा किसी बिल्डर के साथ काम करता है और वह ही सही ढंग का निकला है। एक बेटे ने मैरुआना के पौधे घर के पिछवाड़े में उगा लिए थे और उसे स्कूल के बच्चों को बेचने लगा था। अमेरिका में मैरुआना ग़ैरकानूनी है, सिर्फ़ केलिफोर्निया में सरकार ने अत्यधिक पीड़ा के रोगियों के लिए, थोड़ी-सी खेती करने और कुछ स्टोरों पर बेचने की इजाजत दी हुई है। एफ.बी.आई. की नारकाटिक्स ब्रांच ने कई दिन उसका पीछे करके, छापा मारकर पकड़ लिया और वह भी जेल में है।

पीटर और जेम्स सबसे छोटे और जुड़वाँ हैं। दोनों में बहुत दोस्ती है, एक नम्बर के पाजी हैं। किसी काम में मन नहीं लगता इनका, फ्री में खाना चाहते हैं। माँ की तरह वेल्फेयर का भरपूर फायदा उठा रहे हैं। ज़रूरतें पूरी करने के लिए भीख माँग लेते हैं, पर मेहनत का कोई काम नहीं करना चाहते। बड़े भाई जार्ज ने उन्हें बिल्डर के पास नौकरी दिलवाई, पर वे छोड़-छाड़कर आ गए कि वहाँ बहुत कठिन काम करना पड़ता है।

'हमारी शरीर बहुत नाजुक हैं, ये भारी-भरकम काम नहीं कर सकते। हम भी इन शरीरों को वैसे ही रखेंगे, जैसे ये रहना चाहते हैं। कोई काम नहीं करेंगे।' बड़ी बेशर्मी से हँसते हुए दोनों ने कहा।

जार्ज को गुस्सा आ गया- 'इस घर में आप लोग काम क्यों नहीं करना चाहते, काम करने से आप सब कतराते क्यों हैं? क्या तुम लोगों के मन में दूसरों को देखकर कोई उमंग नहीं उठती। उनकी तरह जीने की चाह नहीं होती। डल-डफ्फर से सारे बैठे रहते हैं, हरामी सब निकम्मे हो गए हैं, निठल्ले खाली बैठकर मुफ्त की खाने के आदी हो गए हैं। अबे सालो, मैं तुम दोनों की ज़िन्दगी बदलना चाहता हूँ और तुम हो कि इस गंदगी में पड़े रहना चाहते हो...।'

'जहाँ जन्मे-पले, वहाँ तुझे गंदगी लगती है... छि..छि.. बड़े ही शर्म की बात है...। यह घर हमें बहुत प्यारा लगता है। तुम जो भी ज़िन्दगी जीना चाहते हो, जियो, हमें इस स्वर्ग को छोड़ने को मजबूर क्यों कर रहे हो। हमें दूसरे लोगों की तरह दो वक्त के भोजन के लिए काम कर-करके मरना-खपना नहीं है। वह तो हमें बिना काम किए ही मिल जाता है।' ढिठाई से मुँह बनाता हुआ जेम्ज बोला था।

'कोकरोचिज तो अपने ऊपर से हटा लो, तुम्हारे बदन खेल का मैदान बने हुए हैं उनके लिए। गधो, थोड़े-बहुत हाथ-पाँव हिला लोगे, तो तुम्हारे बदन की नाजुकता को कुछ नहीं होगा।'

'जार्ज, तुम परेशान क्यों होते हो। इस घर में हम सब इकट्ठे रहते हैं। न वे हमें कुछ कहते हैं न हम उन्हें।'

जार्ज की आवाज़ निराशा से ऊँची हो गई थी- 'ठीक है, पड़े रहो इस गटर रूपी स्वर्ग में, गंदी नाली के कीड़ो.. बास्टर्ड... मैं आज अभी इसी वक्त से आप सबको और यह घर छोड़ता हूँ।' और... वह चला गया। फिर कभी लौटकर नहीं आया। उसे किसी

ने याद भी नहीं किया।

उस दिन के बाद पीटर और जेम्ज़ ने कभी-कभी भीख ज़रूर माँगी, जिसे वे धंधा कहते हैं, पर बाकायदा कोई काम नहीं किया। वे वेल्फेयर लेने लगे, अलग-अलग शैल्टर में सोते हैं, घर में दो बहनें और छह बच्चों के साथ सोने की उन्हें असुविधा होती है, पर इस स्वर्ग का चक्कर ज़रूर लगा लेते हैं।

आज भी वे घर आए हैं...

घर में घुसते ही उन्होंने भाग-भागकर काम किया। अलमारी में से आयरिश स्प्रिंग साबुन की टिक्की निकाली, जो उन्होंने ख़ास मौकों के लिए सँभालकर रखी हुई है, उसे मल-मलकर उन्होंने अपने शरीर की गंदगी साफ़ की। राइट गार्ड डीओडोरेंट पूरे बदन पर स्प्रे किया। खूब रगड़-रगड़कर दाँत साफ़ किए। फिर माउथ फ्रेशनर से कुल्ला किया। बहुत दिनों बाद शेव बनाई। साफ़-सुथरे अधोवस्त्र पहने। प्रैस किए हुए कपड़े निकाले, जो उन्होंने विशेष रातों के लिए रखे हुए हैं। उन्हें पहनकर उन्होंने अपने आपको शीशे में देखा, मूस लगाकर अपने घुँघराले बाल सैट किए। अंत में फिर ब्लैक सुएेड कलाने की शीशी निकालकर उन्होंने अपनी बगलों, जाँघों और कानों के पीछे उसे लगाया। सज-धजकर तैयार होकर उन्होंने अपनी सारी चीज़ें वापिस अलमारी में रखकर ताला लगाया। केमार्ट स्टोर से क्रिसमस के दिनों में सेल पर उन्होंने ये सारी चीज़ें खरीदी थीं, जिन्हें वे बड़े प्यार से सँभालकर, सहेजकर ताले में रखते हैं। पर यह ताला कई बार टूटा भी है, उनकी बहनों के बच्चे ताला तोड़कर इन प्रसाधनों का प्रयोग कर चुके हैं, गाली-गलौच, लड़ाई-झगड़े के बाद नया ताला लगा दिया जाता है। चाबी लेकर वे जल्दी-जल्दी से बाहर निकले।

बाहर निकलते ही ये दोनों, सड़क पर आ गए और क्लब की तरफ़ चल पड़े। दोनों ने पैसे आधे-आधे बाँटकर, अपनी जेबों में रख लिए। राले के डाउन टाउन के जिस इलाके में इनका घर है, वह इस एरिया की क्लब से ज़्यादा दूर नहीं है। बहुत ही पुराना इलाका है और मकान भी टूटे-फूटे हैं। कई घर थोड़े ठीक कर लिए गए हैं और कई घरों की खिड़कियों के शीशे भी टूट चुके हैं और उन पर लकड़ी का फट्टा लगाकर ढका गया है और कई घर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं।

क्लब के निकट जाते ही वातावरण में शराब और धुएँ का भभका उठता महसूस हुआ। कई तरह के तेज़ परफ़्यूम, क्लोन की सुगंध और तरह-तरह की शराब-सिगरेट के धुएँ की दुर्गंध मिश्रित रूप से एक घुटी-घुटी-सी गंध को चारों तरफ़ फैलाए हैं। दोनों को यह गंध बहुत अच्छी लगी। लम्बी-लम्बी साँसें लेकर, उन्होंने अपने नथुनों से फेफड़ों में उसे भरा और खुश होकर उछलकर बोले- 'आज हमारी रात है। आज हम जी भरकर मज़े लूटेंगे...।' और क्लब की ओर बढ़ गए।

बिना पिए ही वे झूमते हुए 'पैराडाइज़' क्लब के दरवाज़े के पास चले गए, सिक्योरटी वाले ने दरवाज़ा खोला और उन्हें अन्दर जाने दिया। क्लबों में यह सबसे सस्ती और घटिया क्लब है और बार, रेस्तराँ और क्लब तीनों का काम करती है। कम आमदनी वाले लोग ही यहाँ आते हैं। अच्छी क्लबों में तो प्रवेश शुल्क होता है।

दरवाज़ा खोलते ही मद्धम रोशनी और डी.जे. के संगीत की ऊँची आवाज़ में, दुर्गंध-सुगंध की मिश्रित गंध बड़ी तेज़ी से उनके फेफड़ों में घुसी। वे सम्मोहित से हुए बार की ओर चल पड़े। सिगरेट के धुएँ, स्मोक मशीन के बादलों और लेसर लाइट को पार करते हुए, वे बीयर का जग लेकर क्लब में एक कोना ढूँढ़ने लगे। कोने में बैठते ही उन्होंने चारों ओर देखा- क्लब के बीचों-बीच कई जोड़े, कुछ साथ-साथ सटे, कुछ दूर-दूर, कुछ एक-दूसरे से चिपटे और कुछ लिपटे नाच रहे हैं। उनको देखते हुए वे जल्दी-जल्दी में बीयर के दो ग्लास गटक गए।

शरीर में गर्मी आनी शुरू हो गई। उन्होंने देखा, थोड़ी दूरी पर ही दो लड़कियाँ वाइन के ग्लास पकड़े इधर-उधर देख रही हैं। उनकी नज़रें हरेक के चेहरे पर घूम रही हैं। पीटर और जेम्ज़ ने उन नज़रों को पहचान लिया। बैरे को बुलाकर पैसे देकर उनके खाली हो रहे ग्लासों को भरने को कहा, इससे उन्हें पता चल जाएगा कि उन लड़कियों की मंशा क्या है और अपने लिए भी बीयर का एक और जग मँगवाया। वातावरण कानफोड़ू संगीत, ऊँची आवाज़ों, थिरकते कदमों, लड़खड़ाती ज़ुबानों से गूँज रहा है- किसी को किसी की बात सुनाई नहीं दे रही। सब ज़ोर-ज़ोर से बोल रहे हैं। एक तरह से चिल्ला रहे हैं। एक कोने में एक महिला-पुरुष बेतहाशा हँस रहे हैं और बार-बार एक-दूसरे से लिपट रहे हैं, चुम्बन ले रहे हैं। डांस फ्लोर पर कुछ जोड़े एक-दूसरे इतने सटे हुए हैं, जैसे वे एक-दूसरे में खो जाना चाहते हैं। सोका म्यूज़िक समात हुआ, और अब हिप-होप शुरू हो गया, कुछ जोड़े बैठ गए, कई नए आए। कदमों, कूल्हों और कमर का रिदम शुरू हुआ।

रात घिरने लगी और भीड़ बढ़ने लगी है। लेसर लाइट्स के बदलते रंगों में डांस फ्लोर भर गया। लड़कियों ने बैरे से पूछा

कि उनके ग्लास किसने भरवाए हैं... बैरे ने उन दोनों की ओर इशारा कर दिया। लड़कियों ने ग्लास ऊँचे करके धन्यवाद किया। जेम्स और पीटर की बाँछें खिल गईं।

गीत बदला, संगीत बदला, सालसा डांस शुरू हो गया। लड़कियाँ उठकर जेम्ज और पीटर की तरफ़ आ गईं और अपना परिचय दिया- लौरा और सहरा, जेम्ज और पीटर ने अपना नाम बताकर हाथ बढ़ा दिए। उन्होंने डांस फ्लोर की ओर इशारा किया। चारों के पैर उस पर थिरकने लगे। जेम्ज और पीटर ने अब गौर से उन दोनों को देखा। वे सुगठित बदन वाली, बहुत चुस्त-दुरुस्त, जीवन से भरपूर लगीं उन्हें। ऐसी लड़कियाँ उनके समुदाय में बहुत सुन्दर मानी जाती हैं। आज की रात इतनी सुन्दर लड़कियों का सान्निध्य प्राप्त होगा उन्हें, अपने भाग्य पर इठलाने लगे वे।

वातावरण में फैली मादकता, जो जग बीयर के बाद, व्हिस्की पीने से दोनों पर नशा हावी हो गया। नसें कसने लगीं। स्नायुओं में तनाव बढ़ गया। शराब देखकर इनसे रहा नहीं जाता और हमेशा की तरह अधिक ही पी लेते हैं। पीटर लौरा पर थोड़ा झुक गया, लौरा ने भी झुकने दिया और उसने अपना एक बाजू पीटर की बगल में डाल दिया, पीटर उसके और करीब हो गया। सहरा ने खुद ही जेम्ज के गले में अपनी बाँहें डाल दीं। जेम्ज ने भी उसकी कमर को हाथों में कस लिया। कुछ देर वे इसी तरह नाचते रहे। एक-दूसरे के साथ और फिर कभी एक-दूसरे से परे होकर। पीटर के अंग बेचैन हो गए, उससे अब इन्तज़ार नहीं हो रहा।

उसने लौरा से पूछ ही लिया- 'यहाँ से जाने के बाद क्या करेंगी आप?'

'कुछ नहीं, हम फ्री हैं, आप भी चल सकते हैं हमारे साथ, हल्का-फुल्का कुछ खाएँगे और फिर आप जो चाहेंगे, वही करेंगे। सहरा मेरी रूम मेट है।

पीटर ने खुश होकर उसे अपनी बाँहों में भर लिया, लौरा भी उसकी बाँहों में लहराने लगी। सहरा जेम्स के साथ लिपट-लिपटकर नाचने लगी। पीटर ने झूमते हुए कहा- 'चलो अब चलते हैं?'

'हमें वाशरूम जाना है। आप इन्तज़ार करें हम अभी आती हैं।' कहकर वे चली गईं...

दोनो इन्तज़ार करने लगे और उन्होंने एक-एक गलास वाइन का और मँगवा लिया। इस बार बैरा आर्डर से पहले उनसे पैसे लेना भूल गया। दूसरे जोड़ों को मदमस्ती में देखकर उन दोनों को कुछ होने लगा। एक ही घूँट में ग्लास खाली कर दिए उन्होंने। लौरा, सहरा अभी वाशरूम से लौटी नहीं। थोड़ा-सा पीने के बाद पीटर का अपने पर काबू नहीं रहता और आज तो उसने बहुत पी ली है। उसने अपनी कमीज़ उतारी और मेज़ पर चढ़कर स्ट्रिपर डांस करने लगा, संगीत की धुन पर, बेहूदा हरकतें शुरू हो गईं, जाँघों पर हाथ फेरने लगा और गुप्तांगों पर हाथ रखकर, कमर मटका-मटकाकर नाचने लगा। फिर कभी अपनी छातियों को छूने लगा, जेम्ज ने उसी का अनुसरण किया और आसपास के लोक तालियाँ बजा-बजाकर उन दोनों का मज़ा लेने लगे।

उन पर नशा इतना हावी हो गया था कि वे गिरने लगे और लौरा, सहरा को आवाज़ें देने लगे, वाशरूम की ओर देखने लगे, वाशरूम मुख्य दरवाज़े के पास है। उनकी आवाज़ें तेज़, लाउड संगीत और लोगों के शोर-गुल में खो गईं। मुख्य दरवाज़े से दो लड़कियाँ भीतर आईं, उन्हें वे दोनों लौरा और सहरा लगीं। वे उन्हें लिपटने को उनकी ओर बढ़े। वे चीख पड़ीं। उन लड़कियों के पुरुष मित्र आगे आए, उन्होंने पीटर और जेम्ज को एक-एक घूँसा ही लगाया था कि वे चित्त होकर फ़र्श पर लुढ़क गए। बैरे ने आकर उनकी जेबें देखीं, वह अपनी पेमेंट लेना चाहता है, जो वह पहले लेना भूल गया था। जेबें खाली हैं। लौरा और सहरा नाचते-नाचते उनकी जेबें खाली कर गईं और वाशरूम के बहाने वहाँ से निकल गईं सिक्योरिटी गार्ड्स को बुलाया गया।

सिक्योरिटी गार्ड्स लुढ़के हुए पीटर और जेम्ज को घसीटते हुए क्लब से बाहर ले आए और एक कोने में उन्हें लाकर लिटा गए। थोड़ी देर बाद आकर उनकी शर्टें उन पर फेंक गए। वहाँ और भी कई पियक्कड़ गिरे पड़े थे। अच्छी क्लबों के बाहर तो पुलिस होती है और ऐसे लोगों को उठाकर ले जाती है, पर इस क्लब के तो आसपास भी पुलिस नहीं होती, वह जानती है कि इन लोगों का रोज़ का काम है, हत्या या बलात्कार के समय ही पुलिस वाले पहुँचते हैं। रात के तीन बजे सिक्योरिटी गार्ड कई और टुन, टल्ली हुए पियक्कड़ों को उन्हीं के साथ सटाकर लिटा गए... सारी रात वे दोनों क्लब के बाहर कोने में सोए रहे...

सुबह सूरज पूरे जोश के साथ धरा पर अपनी रोशनी लेकर आया। पीटर की आँखों पर सूर्य चमका। उसने आँखों पर हाथ रख लिया और जब जेम्ज की आँखों पर उसने अपनी किरणें फेंकी तो वह कुलबुलाया- 'साला यह सूरज क्यों निकलता है। इसको और कोई काम नहीं, बास्टर्ड। तंग करने चला आता है। कच्ची नींद से उठा दिया। इतनी प्यारी नींद आ रही थी।'

'अबे उठ माँ के... नींद के प्रेमी... गद्दों पर पड़े हैं न, जो

नींद टूट गई... चलो उठो...।'

'सफ़ाई वाले आ रहे हैं, यहाँ की सफ़ाई करनी है। चलो, उठो, अपने-अपने घरों को जाओ।' वह रूखा-सा बोला। उसे रोज़ ऐसे लोगों को सँभालना पड़ता है।

घर के नाम पर वे दोनों बौखलाकर उठ बैठे- वे कहाँ हैं? चारों ओर वे देखने लगे। अरे क्लब के बाहर, कमीज़ें पास पड़ी हुई हैं। उन्होंने सिर पकड़ लिया। सिर में दर्द की तीखी लहर दौड़ गई...।

सफ़ाई वाले आ गये, वे खाली बोतलें, बीयर के केन और सिगरेटों के टुकड़े उठाने लगे। उन दोनों ने कमीज़ें पहनीं और ज्यों ही उठने लगे तो उन्होंने महसूस किया कि उनके अधोवस्त्र चिपचिपे और गीले हैं। वे धीरे-धीरे उठे, खड़े होना मुश्किल हो रहा था। बड़ी कठिनाई से खड़े होकर उन्होंने अपनी जेबी में हाथ डाला तो जेबें खाली मिलीं...।

वे चिल्ला पड़े- 'इनको नरक में मार पड़े, कुतियाँ हमारे पैसे ले गईं और हमें खुद के लिए छोड़ गईं। कल कितनी चाह थी। मेहनत की कमाई भी गई और सुख भी नहीं मिला। अरे लूट लिया ग़रीबों को.. थू... कुतियाँ...।'

सफ़ाई मजदूर इनकी ओर देखने लगे, जेम्ज उनको मुखातिब होकर बोला- 'भाई, अमरीका के लोगों को मंदी ने निचोड़ दिया है, जो बेघर लोगों को भी लूटने लगे हैं, सरकार को कुछ करना चाहिए।'

उनके पास एक डॉलर भी नहीं बचा। जेबें खाली हैं। फूड स्टैम्प्स पहले ही बेच चुके हैं। कल का नशा आज भी उन पर हावी है, वे लड़खड़ाते कदमों से घर की ओर चल पड़े, गत्ते का टुकड़ा उठाने, धंधे पर जो जुटना है...।

समीक्षा

कहानियों की भीड़ से अलग कहानियाँ

पंकज सुबीर

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ अपने पक्ष में बहुत शोर-शराबा नहीं करती हैं। ये कहानियाँ बहुत ख़ामोशी के साथ गुज़रती हैं। किन्तु इस ख़ामोशी में वह आवश्यक हलचल ज़रूर है, जो किसी भी कहानी के लिए ज़रूरी होती है। ये कहानियाँ विमर्श, वाद और उस प्रकार के सभी दूसरे टोटकों से परे अपनी ही एक दुनिया बनाती हैं, वो दुनिया जहाँ बहुत छोटी-छोटी, रोज़मर्रा के जीवन से उठाई गई घटनाएँ और अपने ही आसपास टहलते हुए पात्र होते हैं। ये दुनिया इसीलिए पाठक को बहुत अपनी-सी लगती है और इसी कारण वह इन कहानियों से कहीं न कहीं एक प्रकार का लगाव-सा महसूस करने लगता है। इन कहानियों के पात्र जीवन से यथारूप उठाकर कहानी में रख दिए जाते हैं। या यूँ कहें कि ये पात्र स्वयं ही टहलते हुए सुधाजी की कहानियों में चले आते हैं। पात्रों की सहजता इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता होती है; किन्तु इस सहजता के बावजूद कहानी, सरोकारों के प्रति सजग बनी रहती है। लेखिका की सजगता और पात्रों की सहजता के मेल से जो परिणाम सामने आता है, वह पाठक को बाँध लेता है।

समलैंगिकता पर क़लम चलाने में पुरुष लेखक ही डरते रहे हैं, ऐसे में कहानी 'आग में गर्मी कम क्यों है' लिखना और वह भी पूरी जिम्मेदारी से लिखना। कहानी का शीर्षक पूरी की पूरी कहानी में प्रतिध्वनित होता रहता है। एक रहस्यमय अँधेरा दुनिया के कुछ परदों को उठाने का प्रयास लेखिका ने बहुत सफलता के साथ किया है। कहानी उन सारी समस्याओं की बात करती है, जो समलैंगिकता से जुड़ी हैं। और इस समस्याका वैज्ञानिक-पक्ष भी तलाशने की कोशिश करती है। रसायनों के खेल के माध्यम से समलैंगिकता और विषमलैंगिकता की अबूझ पहेली का हल तलाशने की कहानी है ये। लेखिका ने कहानी को पूरी तैयारी के साथ लिखा है। कहानी को इस विषय पर लिखी गई श्रेष्ठ कहानियों में रखा जा सकता है।

इन दिनों बड़े-बड़े विषयों पर बड़ी-बड़ी कहानियाँ, बड़े तामझाम के साथ लिखने का चलन-सा हो गया है। जीवन की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानी का विषय नहीं बन पा रही हैं, जबकि पाठक इनको ही अधिक पसन्द करता है। ऐसे में 'और बाड़ बन गई' जैसी कहानियाँ पाठक को राहत प्रदान करती हैं। बहुत छोटी-सी घटना, जिसमें नया पड़ोसी अपने घर के चारों तरफ़ बाड़ लगवा रहा है। उस बाड़ को प्रतीक बनाकर मानव-मनोविज्ञान की

खूब पड़ताल कर ली गई है। कहानी भले ही अमेरिका में चलती है, किन्तु स्थापित यही होता है कि मनोविज्ञान कमोबेश वही है, देश भले ही कोई-सा भी हो। ये कहानी अपनी पूरी सरलता के साथ अपने आपको पाठक से पढ़वा ले जाती है। पाठक बाड़ के बहाने चल रहे विमर्श का पूरा आनन्द लेता है और कहानी से जुड़ा रहता। बाड़ के एक छोटे से प्रतीक को लेखिका ने अद्भुत विस्तार दिया है। ये प्रतीक जाने कहाँ-कहाँ से गुज़रता है, अपने निशान छोड़ता हुआ। 'कमरा नंबर 103' बिल्कुल अलग प्रकार की कहानी है। टैरी और एमी के अलावा जो तीसरा मूक पात्र मिसेज वर्मा कहानी में उपस्थित है, उसकी ख़ामोशी के संवाद लेखिका ने बहुत सुन्दर तरीके से लिखे हैं। ये भी अपने ही प्रकार की एक कहानी है, जिसमें एक पात्र भले ही कोमा मे है, किन्तु संवाद बराबर कर रहा है। उसके संवाद एकालाप की तरह होते हैं। दूसरी तरफ़ नर्स टैरी और एमी के संवादों के माध्यम से समस्या के मूल तक जाने के प्रयास में कहानी लगी रहती है। ये जो दो समानान्तर रूप से चल रही घटनाएँ हैं, ये कहानी को रोचक बनाए रखती हैं। मिसेज वर्मा कोमा में हैं और उस कोमा के पीछे के सच को जानने की कोशिश में लगी हैं टैरी और एमी। कहानी के अंत में मिसेज वर्मा भी इस कोशिश में शामिल होती हैं, मगर अपने ही तरीके से। कहानी मन को छू जाती है।

'टारनेडो' लेखिका की एक सफल और चर्चित कहानी है। ये कहानी भारत से अमेरिका के बीच में पेण्डुलम की तरह डोलती है; और इस डोलने के बीच कई बिन्दुओं को छूती है। यह कहानी भारतीय परम्पराओं की स्थापना की कहानी है। लेखिका ने पाश्चात्य जीवन-शैली और भारतीयता को एक साथ कसौटी पर कसा है। उन्मुक्तता और मर्यादा के हानि-लाभों को खोला गया है इस कहानी में। मिसेज शंकर एबनार्मल हैं, ये वाक्य भारतीयता के बारे में मानो पूरे पश्चिम द्वारा बोला गया वाक्य है। बरसों बरस से भारतीयों को एबनार्मल बताकर उन्हें संस्कारित करने का प्रयास पश्चिम द्वारा होता रहा है। ये कहानी उन सारे प्रयासों का एक सुदृढ़ तथा सटीक उत्तर है। उत्तर जो उसी भाषा में दिया गया है, जिस भाषा में प्रश्न होता है। लेखिका ने अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों का तुलनात्मक पाठ कहानी में प्रस्तुत किया है।

'वह कोई और थी' कहानी एक बहुत आम समस्या को अलग तरह से प्रस्तुत करती है। विवाह के माध्यम से अमेरिका की नागरिकता लेना तथा उसके लिए अपने साथी की हर बात को सहन करना। ये कहानी का एक पक्ष है, किन्तु दूसरा पक्ष ये भी है कि यदि ये विवाह नागरिकता लेने के लिए न होकर प्रेम के चलते किया गया हो तो...? कहानी ग्रीन कार्ड, अस्थाई नागरिकता जैसे तकनीकी शब्दों के अर्थ कहानी में आम पाठक के लिए सरलता से आते हैं। यह कहानी एक अलग प्रकार के पुरुष-विमर्श की कहानी है। पुरुष-विमर्श, जिस पर चर्चा करने से हर कोई कतराता है। समलैंगिकता के बाद पुरुष-विमर्श पर कहानी लिखकर लेखिका ने मानो निर्धारित दायरों को तोड़ने की चुनौती को स्वीकार किया है। हिन्दी साहित्य में स्त्री-विमर्श नाम पर जो एकपक्षीय लेखन पिछले कई दिनों से चल रहा है, उसका प्रतिकार है ये कहानी। 'दृश्य भ्रम' एक ऐसी कहानी है, जिसमें संवादहीनता के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियों को केन्द्र में रखा गया है। आज के तेज़ सूचना-प्रधान युग में इस प्रकार की संवादहीनता की गुंजाइश नहीं के बराबर है, किन्तु जिस समय की बात कहानी में है, उस समय में इस प्रकार की संवादहीनता अक्सर होती थी। कथानायक और नायिका के बीच पैदा की गई गलतफहमी और उसके बाद नायक का दृश्य से लुप्त हो जाना। कहानी में एक साथ कई प्रश्नों की तलाश करने का प्रयास है, जिनमें ऊँच-नीच, जात-पात जैसे प्रश्न भी हैं।

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की एक और चर्चित कहानी है- 'सूरज क्यों निकलता है'। ये कहानी मनोविज्ञान के अलग धरातल पर लिखी गई है। कहानी उस मानसिकता की बात करती है, जो मानसिकता किसी देश या काल से बँधकर नहीं रहती। हम अपने देश में अपने आसपास भी इस प्रकार के चरित्रों को, पात्रों को देख सकते हैं, देखते रहते हैं। हमें लगता है कि इस प्रकार के लोग केवल हमारे ही देश में होते हैं, किन्तु जब इस प्रकार की कहानियाँ पढ़ने को मिलती हैं, तो हमें पता लगता है कि ये पात्र तो वैश्विक हैं; हर जगह पाये जाने वाले पात्र, जिनका नाम जेम्ज-पीटर या घीसू-माधव कुछ भी हो सकता है। नाम बदलने से मानसिकता नहीं बदलने वाली। इस कहानी में लेखिका अपने उद्देश्य में पूरी तरह से सफल रही है। मानव-मन के जिस अंधकार की तरफ़ कहानी का शीर्षक इशारा कर रहा है, उसको पूरी तरह से जस्टीफाई करती है ये कहानी। ये लेखिका की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक कहानी है।

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ अपने अनोखे विषयों के लिए चर्चित रहती हैं और इस संग्रह की कहानियों में भी वह विविधता, वह अनोखापन है। नए और अछूते विषयों को अपनी कहानियों के लिए चुनने की लेखिका की जिद उनकी कहानियों को भीड़ से अलग बनाती है; और इस संग्रह की कहानियों में भी वो जिद लगभग हर कहानी में नज़र आती है।